Date - 08. 02. 2022
B.A (Hons)

Dr. Deepak kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
S.R.A.P College, Bara Chakiya

अध्ययन स्रोत के रूप में अलबरूनी के विवरण।

1) अलबरूनी हिन्दुओं के राष्ट्रीय चरित्र पर प्रकाश डालता है।
2) हिन्दुओं में छुआ-छूत की भावना तथा मुसलमानों से सम्पर्क से परहेज
3) चतुवर्ण व्यवस्था तथा चारों वर्णों की उत्पत्ति।
4) वह वैश्यों तथा शूद्रों की समान स्थिति का विवरण देता है।
5) चार वर्णों के अतिरिक्त वह 8 अंत्यज जातियों का विवरण देता है।
6) वह आश्रम व्यवस्था का जिक्र करता है तथा द्विजों को चार आश्रमों में विभाजित करता है
7) वह महिलाओं की दशा का वर्णन देता है वह दहेज प्रथा का जिक्र नहीं करता। इसी प्रकार वह जौहर प्रथा का जिक्र नहीं करता किन्तु वह राज-परिवार में सती प्रथा का जिक्र करता है और यह भी मानता है कि इस काल में महिलाओं की दशा अच्छी नहीं थी।
8. वह हिन्दुओं के पर्व तथा तीर्थ स्थलों का जिक्र करता है।
9. अलबरूनी अद्वैत चिन्तन से प्रभावित है
10) वह हिन्दुओं की कुछ विचित्र आदतों का भी जिक्र करता है।

सीमाएँ:- (1) अलबरूनी के विवरण में राजनीतिक घटनाओं का जिक्र नहीं किया गया है इतना तक कि इसमें महमूद गजनी के आक्रमणों का भी विवरण नहीं मिलता।

ग। सबसे बढ़कर अलबरूनी ने अपने विवरण में क्षत्रिय को जिक्र किया है परन्तु राजपूतों का नहीं जबकि यह काल राजपूत काल था।

8

9

10

11

12

1

2

3

4

5

6

2021 • AUGUST • THURSDAY 05

Date :- 08.02.2022

B.A (Hons)
Dr Deepak kumar Rajak
Assistant professor
S.R.A.P college, Bara chakiya

अशोक के प्रशासनिक सुधार :

Ans (1) अशोक ने पितृसत्तात्मक राजतंत्र का मॉडल दिया जिसमें उसने जिक्र किया कि सारी प्रजा मेरी संतान है जिसका उल्लेख चौदहवीं शिलालेख में मिलता है।

(2) अशोक अपने दूसरे द्वितीय वृहद शिलालेख में लोक कल्याणकारी कार्यों पर बल देता है जिसमें जिक्र है कि न केवल अस्पताल बनवाए बल्कि कई सरायों एवं सड़कों कि मरम्मत करवाया या बनवाया।

(3) अशोक प्रशासनिक दृढ़ता पर बल देते हुए कहता है कि वह चाहे राजधानी में क्यों न हो अधिकारी उससे किसी भी समय मिल सकते हैं इसका उल्लेख उसने ~~दूसरे~~ दूसरे वृहद शिलालेख में किया है।

(4) प्रादेशिकों जैसे अधिकारियों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में प्रशासनिक गतिविधियों के निरीक्षण के लिए प्रत्येक पाँच वर्षों की यात्रा को प्रोत्साहित किया जाना (तृतीय वृहद शिलालेख)

(5) धम्म महामात्र नामक अधिकारियों के माध्यम प्रशासन को नैतिक मूल्यों से जोड़ना तथा एक समान आचार संहिता को विकसित करने का प्रयास।

(6) उसने अपने प्रशासन के संचालन में यथा संभव कम से कम दंड नीति का उपयोग करना चाहा (मृत्यु दंड प्राप्त लोगों को तीन दिनों की मुहलत दी जाती थी।